P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत् शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि पर वैवाहिकि स्थिति के प्रभाव का अध्ययन

काशी नरेश सिंह
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर म.प्र., भारत

भावना सोनेजी
प्राचार्या,
डॉ.राधाकृष्णनन् कॉलेज ऑफ ऐजूकेशन,
जबलपुर, म.प्र., भारत

सारांश

प्राथमिक स्तर पर विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के कार्य एवं सम्बन्धों के प्रति अभिवृत्तियों के सम्मिश्रण का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि उत्तम वेतन, समस्याओं का निवारण, भविष्यनिधि, पेन्शन, स्थायी नियुक्ति, कार्य की दशा, उन्नति के अवसर आदि महत्वपूर्ण एवं विशेष हैं। अध्ययन में प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की शाब्दिक प्रश्नावली का प्रयोग करके विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्य के प्रति उनके व्यावसायिक दृष्टिकोण, काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संस्था के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन किया गया और पाया गया कि कार्य संतुष्टि वैवाहिक स्थिति से स्वतंत्र है। विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कुल कार्य सन्तुष्टि लगभग समान है। इसलिए प्राथमिक स्तर की विवाहित एवं अविवाहित दोनों प्रकार की शिक्षिकॉए विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर अपना अध्यापन कार्य कर रहीं है।

मुख्य शब्दः प्राथमिक स्तर की विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएँ एवं कार्यसन्तुष्टि।

प्रस्तावना

विद्या ददाति विनयंम् विनयात् याति पातताम्।
पात्रतात् धनं आप्नोति, धनात् धर्मः तवः सुखम्।।

शिक्षार्थी को बिना ध्येय निर्धारित किये अपने जीवन में यथेष्ट सफलता नही मिल पाती है। यदि शिक्षार्थी को यही ज्ञात होगा कि उसे क्या करना है, तो किस प्रकार अपने जीवन को सफल बनाने में सफल हो सकेगा। इस प्रश्न का उत्तर उसे प्राथमिक स्तर की परीक्षा के साथ ही मस्तिष्क में आ जाना चाहिए। जब शिक्षार्थी अपना ध्येय निश्चित कर लेता है तो उसके सामने साध्य वस्तु हर समय विद्यमान रहती है और साधनों को सफल करने में सरलता रहती है माना किसी विद्यार्थी का लक्ष्य शिक्षक बनना है तो वह हाई स्कूल में प्राप्त करने में ऐच्छिक विषय का चुनाव करेगा। विद्या एवं विवेक का सहारा लेकर अपना पक्ष सुदृढ बनाने का प्रयास करेगा, शिक्षक बनने के लिए बी.ए./बी.एस.सी./बी. कॉम., बी.एड़. तथा एम.एड.की शिक्षा प्राप्त करता है।

आचार्य देवो भवः

माता–पिता बालक के भौतिक शरीर को जन्म देते है किन्तु उसे बौद्धिक दृष्टि से विकसित करने ,जीवन की कला सिखाने का श्रेय आचार्य (गुरू) को है।

गुरूब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूदेर्वोमहेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रहम् तस्मै श्री गुरूये नमः।।

हमारे भारतीय साहित्य में स्थान–स्थान आचार्य (गुरू) गान किया है शतपथ ब्राह्मण में एक स्थान कहा गया है –

मात्मान पितृमान् चार्यवान पुरूषों वेद''

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कहा है ।

मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवों भवः

अर्थात् बालक के लिए माता–पिता एवं आचार्य तीनों ही देवता होते है यही नहीं हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध कवि कबीर दास नें कहा है

गुरू गोविन्द दोऊ खडे काके लागू पॉव।
वालिहारी गुरू आपने गोविन्द दियों बताये।।

बौद्ध काल में यही शिक्षा व्यवस्था मठों एवं व्यवहारों में परिवर्तित हुई पर गुरू का स्थान बही बना रहा। प्रसिद्ध चीनी यात्री व्हेनसांग ने लिखा है कि

नालन्दा आदि बिहारों में अत्यन्त उद्भट्ट आचार्य रहते थे जो शिष्यों के समक्ष एवं जीवित अनुकरणीय आर्दश प्रस्तुत करते थे। मध्यकाल में आकर जब इस्लामी युग आया तब गुरू भक्ति का आदर्श इतना उच्च नही रहा जितना प्राचीन काल में था।

जीवन का चाहे कोई क्षेत्र हो शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की अहम भूमिका है चूंकि उनके द्वारा सुव्यवस्थित समाज एवं आदर्श राष्ट्र का निर्माण किया जाता है। अतः यह जानना यह आवश्यक होगा कि शिक्षक एवं शिक्षिकाएं जो शिक्षण में है वह कौन है क्या वृहत्तर समाज में अपना योगदान करके सन्तुष्टि प्राप्त कर रही है और वह घर से बाहर निकलकर अपनी व्यक्तिगत सन्तुष्टि का त्याग कर रही है या शिक्षण एवं परिवारिक परिस्थिति के बीच पिसती जा रही हैं। यह जानने के लिए शोधकर्ता ने प्राथमिक स्तर की शालाओं में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि की स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करने का एक प्रयास किया है। और परिणाम प्राप्त किये है।

सिंह रंजीत (2010)[1] ने पाया कि ग्रामीण शिक्षक शहरी शिक्षक की तुलना में अधिक कार्य सन्तुष्टि है एवं शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि पर नीति का प्रभाव पड़ता है।

कौर सताविन्दर (2011)[2] ने पाया कि पुरूष शिक्षक की अपेक्षा महिला शिक्षकों का व्यवसायिक प्रतिबल का स्तर निम्न था।शहरी शिक्षकों ने ग्रामीण शिक्षको की अपेक्षा अधिक व्यवसायिक सन्तुष्टि प्रदर्शित की।

अंजली शर्मा (2012)[3] ने सरकारी स्कूलो की महिला शिक्षक, निजी स्कूलो की महिला शिक्षकों से अधिक सन्तुष्टि पाई गई कारण कि निजी स्कूलों में शिक्षिकाओं को शिक्षण के अलावा अन्य कार्यो में सहभागिता करनी होती है। ग्रामीण अंचल की शिक्षिकाये शहरी शिक्षकाओं की तुलना में अधिक सन्तुष्टि पाई गई कारण कि ग्रामीण शिक्षिकाओं की अपेक्षाए शहरी शिक्षिकाओं की तुलना में कम पाई गई।

अजीम मोहम्मद तहलील, हैक्यू मोहम्मद मोइनुल एवं चौधरी राशहिद अहमद (2013)[4] ने पाया कि विवाहित एवं अविवाहित पुरुष एवं महिला कर्मचारियों की कार्यसंतुष्टि की श्रेणी औसत कार्यसंतुष्टि अन्तर आयी पुरुष एवं महिला कर्मचारियों की कार्यसंतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था। इसी प्रकार विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं था।

ओसोलुई मेसे, वलेसिंग एवं बिनेला (2016)[5] ने निष्कर्ष निकाले उनसे ज्ञात हुआ की वैवाहिक स्थिति पर कार्य निष्पादन का सार्थक प्रभाव पड़ता है, अध्ययन में यह सुझाव दिया गया की शाला में परामर्श दाताओं की नियुक्ति की जानी चाहिए जिससे कि शिक्षकों की मनौवैज्ञानिक एवं पारिवारिक समस्याओं सहायक हो सकें।

किमुन्टटों मुसोने ईस्थर एवं अन्य(2018)[6] ने पाया कि अविवाहित की तुलना में विवाहित शिक्षक अपने कार्य से अधिक संतुष्ट थे।यदि वैवाहिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है तो निष्कर्ष शिक्षिकाओं मार्गदर्शन एवं परामर्श में सहायक होंगे कि किस प्रकार वे अपने कार्य सन्तुष्टि को बढ़ा सके जिससे उसके ज्ञान, प्रशिक्षण, एवं सम्भाव्य लाभ मिल सके जो विद्यार्थी की सर्वांगीण विकास में सहायक होगा जिससे वह सुयोग्य नागरिक बनकर राष्ट्र के निर्माण योगदान दे सकेंगे।

चर

स्वतन्त्र चर – वैवाहिक स्तर (विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाएँ)

परतंत्र चर – कार्य सन्तुष्टि

अध्ययन के उदेश्य

1. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि के प्रभाव का अध्ययन।
2. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि के कारकों–व्यावसायिक दृष्टिकोण, काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण, व्यवसायिक अभिवृत्ति, एवं संस्था के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

1. जबलपुर जिले के प्राथमिक स्तर की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि में सार्थक प्रभाव नहीं होता है–
2. जबलपुर जिले की सेवारथ विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि की कारकः– व्यवसायिक दृष्टिकोण, काम करने क स्थिति के प्रति दृष्टिकोण व्यावसायिक अभिवृत्ति, संस्था के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक प्रभाव नही होता है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में 200 विवाहित एवं 200 अविवाहित शिक्षिकाओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। न्यादर्श विवरण इस प्रकार है।

तलिका संख्या 01

वैवाहिक स्थिति	संख्या
विवाहित	200
अविवाहित	200
योग	400

परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में कार्यसन्तुष्टि मापनी –डॉ. प्रमोद कुमार एवं डॉ.डी.एन. मुथा द्वारा निर्मित मानकीकृत परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

विधि

प्रतिनिधि कार्य न्यायदर्श में चयनित विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि मापनी का प्रशासन किया गया फलांकन के उपरान्त परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिये सांख्यिकी विधियों का उपयोग कर परिणाम प्राप्त किया गया जो अगली तालिका में प्रस्तुत किये गये हैं।

विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 02 के आधार विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि के मध्यमानों में सार्थक प्रभाव नही है। जो अन्तर आया है वह संयोगवश है अतः विवाहित एवं अविवाहित सार्थक प्रभाव नहीं है।

तालिका नं.–03 के आधार विवाहित अविवाहित शिक्षिकाओं की व्यावसायिक दृष्टिकोण, व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं संस्था के प्रति दृष्टिकोण में टी.का

परिगणित मान क्रमांश 0.76, 0.79 एवं 0.36 आया है जो कि सार्थक स्तर 0.05 के तालिका मूल्य 1.97 से कम है अतः विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की व्यवसायिक दृष्टिकोण व्यवसायिक आभिवृत्ति संस्था के प्रति दृष्टि कोण में कार्य सन्तुष्टि में कोई अन्तर नही है जब कि कार्य करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण में टी. का परगणित मूल्य 2.60 जो कि 0.01 की सार्थकता स्थर पर तालिका मूल्य 2.59 से अधिक है अतः जबलपुर जिले की सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्य सन्तुष्टि काम करने की स्थिति के प्रति विवाहित शिक्षिकाओं की तुलना में अविवाहित अधिक समर्थ होती है।

तालिका नं.2

विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के कार्य सन्तुष्टि का सम्बन्धी तुल्नात्मक परिणाम

वैवाहिक स्थिति	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	क्रार्तिक अनुपात	पी.मान
विवाहित	200	45.31	8.59	0.71	<0.05
अविवाहित	200	45.92	8.79		

स्वतंत्रता अंश –398,

0.05 स्तर पर सार्थकता–1.97

0.01 स्तर पर सार्थकता –2.59

उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने के बाद यह पाया गया कि प्राथमिक स्तर की शालाओं में सेवारत् शिक्षिकाओं कि कार्य सन्तुष्टि में सार्थक प्रभाव नही होता है। प्राथमिक स्तर की 200 सेवारत् विवाहत शिक्षिकाओं की सन्तुष्टि का मध्यमान 45.31 तथा मानक विचलन 8.59 है। जबकि 200 अविवाहित शिक्षिकाओं का मध्यमान 45.92 तथा मानक विचलन 8.79 है अतः उपरोक्त तालिका के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्तर की शालाओं में कार्यरत शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका नं.3

विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की कार्यसन्तुष्टि कारको संबधी तुलनात्मक परिणाम

कार्य सन्तुष्टि के कारक	वैवाहित स्थिति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रातिक अनुपात	पी.मान
व्यावसायिक दृष्टिकोण	विवाहित	200	10.82	1.78	0.76	>0.05
	अविवाहित	200	10.67	2.03		
काम करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण	विवाहित	200	13.00	4.40	2.60	<0.05
	अविवाहित	200	14.12	4.24		
व्यावसायिक अभिवृत्ति	विवाहित	200	10.60	3.32	0.79	>0.05
	अविवाहित	200	10.35	3.04		
संस्था के प्रति दृष्टिकोण	विवाहित	200	10.90	3.07	0.36	>0.05
	अविवाहित	200	10.79	2.99		

विवेचना

कार्यसंतुष्टि के तीनों कारक क्रमशः, "व्यवसायिक दृष्टिकोण, व्यवसायिक अभिवृत्ति, संस्था का प्रति दृष्टिकोण" पर वैवाहिक स्थिति का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा है विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के मध्य इन तीनों क्षेत्रों के क्रान्तिक मान क्रमशः 0.76, 0.79 एवं 0.36 आया है (सन्दर्भ तालिका क्रम –3) जो सार्थकता के न्यूनतम सारणी मान से कम है, यह परिणाम यह प्रदर्शित कर रहें है कि कार्य संन्तुष्टि के तीनों कारक व्यवसायिक दृष्टिकोण, व्यवसायिक अभिवृत्ति, संस्था का प्रति दृष्टिकोण वैवाहिक स्थिति से स्वतंत्र हैं जबकि कार्य संतुष्टि के कारक "कार्य करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण" पर वैवाहिक स्थिति का प्रभाव पड़ा है। विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 2.60 आया है यह निष्कर्ष यह प्रदर्शित कर रहें है कि कार्य करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण वैवाहिक स्थिति से स्वतंत्र नहीं हैं। अतः कुल कार्य संन्तुष्टि के चारों क्षेत्रों का योग पर भी वैवाहिक स्थिति का प्रभाव नहीं पड़ा है। विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकाओं के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान 0.76 आया है। (सन्दर्भ तालिका क्रम–2) जो सार्थकता के न्यूनतम सारणी मान से कम है यह परिणाम यह प्रदर्शित कर रहे है कि कुल कार्य सन्तुष्टि वैवाहिक स्थिति से स्वतंत्र है।

सरकारी स्कूलो की महिला शिक्षक निजी स्कूल की शिक्षिको से अधिक सन्तुष्ट पाई गई निजी स्कूलो में शिक्षण के अतिरिक्त अन्य कार्यो में सहभागिता करने की कारण असन्तुष्टि बनी रहती है। ग्रामीण अंचल कि महिला शिक्षक शहरी महिला शिक्षक आदि की व्यावहारिक स्थिति भी शिक्षक कार्य में प्रभाव डालती है चूंकि विवाहित शिक्षिकाये घर परिवार के साथ शिक्षण का उत्तरदायित्व की दोहरी भूमिका निभाती है। अविवाहित शिक्षिकाये शिक्षिण में अधिक समय देती हैं । सरकारी स्कूलों की शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में शिक्षण कार्य में कोई अन्तर नही पाया गया। यह अध्ययन शिक्षिकाओं को परामर्श एवं मार्गदर्शन आदि को देने में सहायक होगा जिससे उनकी कार्यसन्तुष्टि बढ़े और शिक्षण के साथ जीवन नैया को पार करने का लाभ मिल सके जिसके विद्यार्थी का सर्वाग्रीण विकास हो और राष्ट्र का सुयोग्य नागरिक प्राप्त हो सके।

निष्कर्ष

कार्य संतुष्टि के चारों क्षेत्रों में से तीन क्षेत्रों में विशेष अन्तर नहीं पाया गया है परन्तु एक महत्वपूर्ण क्षेत्र कार्य करने की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण में अधिक अन्तर पाया गया है। कुल कार्यसंतुष्टि के (चारों क्षेत्रों का योग)

की दृष्टि से वैवाहिक स्थिति का दोनो प्रकार के समूहों के प्रति विशेष प्रकार का अन्तर नहीं पाया गया है। अतः कार्यसंतुष्टि वैवाहिक स्थिति से स्वतन्त्र है।

शिक्षिकाएँ चाहें विवाहित हो या अविवाहित हों उनकी कार्यसन्तुष्टि लगभग समान है। वे शिक्षण के प्रति समान रूप से सकारात्मक अभिवृत्ति रखती हैं। कारण समान शैक्षिक परिस्थितियों का होना शैक्षिक समस्याओं का सामना करना हो सकता है। विवाहित एवं अविवाहित दोनों प्रकार की शिक्षिकाएँ सभवतः शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों के सर्वागीर्ण व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखकर अपना कार्य कर रहीं हैं। इसलिए विवाहित शिक्षिकाओं अपनी दोहरी भूमिका अन्तर्द्वन्द्व से दूर हटकर विद्यार्थियों के हित में अध्यापन कार्य कर रहीं है संभवता इसीलिए कार्य सन्तुष्टि पर वैवाहित स्थिति का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ा। यह मान्यता है कि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को अच्छे पारिवारिक वातावरण के साथ अच्छा शैक्षिक वातावरण मिलता है तो उससे उनका जो सर्वांगीर्ण विकास होता है वह उनके भावी जीवन के लिए नींव का पत्थर सिद्ध होगा। जीवन के किसी भी क्षेत्र में शिक्षिकाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है शिक्षिकायें अपने कार्य के प्रति ईमानदार होती है वह अपने अधिकार एवं कर्तव्य के प्रति सजग है समाज में अपनी परिस्थिति को निर्धारित कर रही है। वर्तमान में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो में सेवारत् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षिकार्य अपने शिक्षण में सन्तुष्टि है। शिक्षक प्राप्त करने एवं प्रदान करने बाद वे कुछ आकांक्षाये रखती है। जो शिक्षण व्यावसाय से पूर्ण होती है, ऐसा प्रतीत होता है कि जब शिक्षिका पूर्ण रूप से सन्तुष्ट है तो वह कम से कम वह एक परिवार एवं स्कूल को सूचारू से चलाती है जिस कारण उनकी कार्यसन्तुष्टि है। और उनकी सहभागिता राष्ट्र निर्माण में देखी जा सकती है। जिस कारण से विद्यार्थी का सम्पूर्ण विकास कर एक सुयोग्य राष्ट्र निर्माता का निर्माण सन्तुष्टि शिक्षिका के द्वारा सम्भव हो रहा है।

अंत टिप्पणी

1. *अब्बासी, पी (2003) अ कम्परेटिव स्टीडी ऑफ जॉब सेटिस्फिकेशन अमंग प्राइमरी स्कूल टीचर इन इंडिया, न्यू फ्रांटियर्स इन एजूकेश्न वाल्यूम*
2. *जायसवाल सीताराम (सन्) – भारतीय शिक्षा का इतिहास, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर ।*
3. *कुमार प्रमोद एण्ड बोहरा, चंन्द्रकला* (1979) *– जॉव सैटिफैक्शन एण्ड परसीब्ड आरॅगनाइजेशन क्लाईमेट द इंडिया जनरल ऑफ सोशल वर्क अप्रैल 1979 वाल्यूम ।। नं.1 पेज सं0 23–26*
4. *वेस्ट, जान, डब्लू (2005) रिसर्च इन एजूकेशन ,नयी दिल्ली*
5. *शर्मा, आर. ए.,(2005) शिक्षा अनुसंधान,(मेरठ) सूर्या पब्लिकेशन, निकट राजकीय इन्टर कालेज सुखिया, एस.पी. (2006) शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ आर.लाल. बुक डिपो*
6. *Azim, M.T. and Haque, M.M. and Chowdhary R.A.(2013) Gender, Marital Status and jobsatisfaction nad Emprical study international review of management of Business Research Vol-2, issue to, page 488.*
7. *Oselumese. I. B., Blessing, O. and vennela. O. (2016) Marital Status and Teacher's Job perfomance public secondry school in edo state international journal of Social Relevenuce and Concern Vol- 4, Issue 9 page 33.*
8. *Kemunto. M.E. Adhianmbo, R,P, and Joseph B. (2018), Is marital status and predictor of job satisfaction of public secondary school techer http://creative commons org liansese*